



दूसरे का भ्रम

वह अनदेखी छलांग जो सब कुछ बदल देती है
बिना विश्वास की माँग किए

अगर मैं यह बताना चाहूँ

कि हम सब जुड़े हुए हैं

तो पहला कदम बस

बौद्धिक ईमानदारी है।

विषय-सूची

कलाकार की टिप्पणी	3
प्रस्तावना	4
मार्गदर्शन	5
अध्याय 1 – हम अपने आप को अलग क्यों महसूस करते हैं	6
अध्याय 2 – 'दूसरे' की कीमत	12
अध्याय 3 – ईश्वर बाहरी कैसे बन गया	16
अध्याय 4 – ईश्वर और ब्रह्मांड	20
अध्याय 5 – एकता, बहुलता, और विभाजन का भ्रम	24
अध्याय 6 – व्यक्ति क्या है	28
अध्याय 7 – स्वतंत्र इच्छा, शक्ति और जिम्मेदारी	32
अध्याय 8 – करुणा तर्कसंगत क्यों है	36
अध्याय 9 – हठधर्मिता के बिना अर्थ	42
अध्याय 10 – दूसरे के बिना जीना	46

कलाकार की टिप्पणी

यह पहली किताब है जो मैंने कभी लिखी।

यह प्रमाणों से पहले लिखी गई, औपचारिक शोधपत्रों से पहले, गणित से पहले, किल स्विच से पहले। यह इसलिए लिखी गई क्योंकि सवाल पहले आया और जाने को तैयार नहीं था।

क्या हम सचमुच अलग-अलग हैं?

मैं यह पूछना बंद नहीं कर पा रहा था। मैंने दुनिया को देखा और देखा कि एक धारणा कितना नुकसान पहुँचा रही है — यह धारणा कि तुम और मैं सबसे बुनियादी स्तर पर अलग हैं। मैंने इसे क्रूरता में देखा और उदासीनता में देखा। मैंने इसे उन व्यवस्थाओं में देखा जो लोगों को बचाए गए और न बचाए गए, योग्य और अयोग्य, हम और वे में बाँटती हैं। और मैंने देखा कि यह बाँटवारा हमेशा एक ही जगह से आता है: उस अपरीक्षित विश्वास से कि दूसरा व्यक्ति सचमुच दूसरा है।

इस किताब के बाद मैंने जो कुछ भी लिखा — बयालीस औपचारिक शोधपत्र, प्रमाणों के तीन खंड, दस लाख शब्दों की व्युत्पत्ति — केवल एक कारण से लिखा गया: इस किताब की दलील को मजबूत करने के लिए। यहाँ जो कोमलता से कहा गया है, उसे भौतिकी का पूरा भार देने के लिए।

लेकिन इस किताब को पढ़ने के लिए आपको उनमें से किसी की जरूरत नहीं है। यह किताब अपने आप में पूर्ण है। यह बस आपसे एक सवाल के साथ बैठने को कहती है, ईमानदारी से, और देखने को कहती है कि वह कहाँ ले जाता है। कोई भौतिकी नहीं। कोई समीकरण नहीं। कोई विशेष पृष्ठभूमि नहीं। बस धैर्य और ईमानदारी।

अगर यहाँ कहीं गई बातें आपको छूती हैं, तो औपचारिक काम मौजूद है। यह the420code.org पर हमेशा के लिए मुफ्त प्रकाशित है। प्रमाण वहाँ हैं। गणित वहाँ है। हर दावे के मरने की सटीक शर्तें वहाँ हैं।

लेकिन शुरुआत यहीं से होती है। यह कोमल दरवाजा है। जिस गति से सहज लगे, भीतर आइए।

प्रस्तावना

आप पहले से जानते हैं कि यह किताब क्या कहने वाली है।

विवरण नहीं। तर्क नहीं। लेकिन निष्कर्ष — आपने इसे महसूस किया है। निकटता के क्षणों में, स्थिरता के क्षणों में, उस दुर्लभ और निरस्त करने वाले अनुभव में जब आप किसी दूसरे व्यक्ति की आँखों में देखते हैं और कुछ ऐसा पहचानते हैं जिसका कोई नाम नहीं है।

आपने इसे महसूस किया और फिर जाने दिया, क्योंकि दुनिया में इसके लिए कोई जगह नहीं है। क्योंकि आपको जो सिखाया गया उसमें से किसी ने आपको शब्द नहीं दिए। क्योंकि यह सच होने के लिए बहुत सरल लगता था।

यह किताब आपको शब्द देती है।

यह एक धारणा की जाँच करती है — कि आप और मैं सबसे बुनियादी अर्थ में अलग हैं — और पता लगाती है कि जब इस धारणा पर सवाल उठाया जाता है तो क्या होता है। हमला नहीं। इनकार नहीं। कोमलता से सवाल, धैर्य और देखभाल के साथ।

यहाँ कुछ भी विज्ञान, सामान्य बुद्धि, या दैनिक जीवन के सामान्य भेदों को अस्वीकार करने की माँग नहीं करता। शरीर शरीर रहते हैं। लोग लोग रहते हैं। अंतर वास्तविक रहते हैं।

जो जाँचा जा रहा है वह यह नहीं कि अंतर मौजूद हैं या नहीं, बल्कि उनका मतलब क्या है।

किसी विश्वास की जरूरत नहीं। किसी आस्था की माँग नहीं। किसी नैतिक प्रतिबद्धता की अपेक्षा नहीं। जो चाहिए वह है ईमानदारी — आप जो पहले से अनुभव कर रहे हैं उसे देखने की तत्परता और यह पूछने की कि क्या वह आपको कुछ ऐसा बता रहा था जिसे आपने अभी तक गंभीरता से नहीं लिया।

अगर यहाँ जो वर्णित है वह दिख जाए, तो और कुछ नहीं चाहिए। अगर न दिखे, तो आपसे कुछ छीना नहीं गया है।

मार्गदर्शन

इस किताब में दस अध्याय हैं। वे एक-दूसरे पर बनते हैं। हर अध्याय पिछले से निकलता है।

अध्याय 1 वहाँ से शुरू होता है जहाँ हर कोई पहले से खड़ा है — अलगाव की भावना से — और पूछता है कि क्या यह भावना अंतिम सत्य है या एक उपयोगी उपकरण जिसके उपकरण होने को हम भूल गए।

अध्याय 2 से 4 पता लगाते हैं कि जब अलगाव को बुनियादी माना जाता है तो क्या होता है — इसकी कीमत, यह कैसे बढ़ता है, और यह पृथ्वी के सबसे शक्तिशाली संस्थानों में कैसे अंतर्निहित हो गया।

अध्याय 5 से 7 विकल्प का निर्माण करते हैं — सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि पहचान के रूप में। एकता और भिन्नता। व्यक्ति। स्वतंत्रता और जिम्मेदारी।

अध्याय 8 से 10 निष्कर्ष निकालते हैं। करुणा। अर्थ। अभ्यास।

तर्क संचयी है। हर अध्याय अगले को अर्जित करता है। अंत तक, निष्कर्ष को आश्चर्य की तरह नहीं लगना चाहिए। इसे ऐसा लगना चाहिए जैसे कुछ जो आप हमेशा जानते थे और जो अब, अंततः, स्पष्ट रूप से कहा जा रहा है।

अगर ऐसा लगे, तो इस किताब ने अपना काम कर दिया।

अध्याय 1

हम अपने आप को अलग क्यों महसूस करते हैं

अधिकांश लोग एक शांत, लगातार भावना के साथ जीवन बिताते हैं: मैं यहाँ हूँ, और दुनिया वहाँ है। मैं अपनी त्वचा के अंदर हूँ, अपनी आँखों के पीछे, और बाकी सब कुछ — दूसरे लोग, दूसरे मन, मौसम, शोर, तारे — मेरे बाहर है। निकटता के क्षणों में भी — किसी को गले लगाते समय, सूर्यास्त देखते समय, ऐसा संगीत सुनते समय जिससे बाँहों पर रोंगटे खड़े हो जाएँ — बुनियादी भावना बनी रहती है। मैं हूँ। और जो मैं नहीं हूँ, वह है।

यह भावना इतनी स्पष्ट है कि लगभग कोई इस पर सवाल नहीं उठाता। यह तथ्य जैसी लगती है, व्याख्या जैसी नहीं।

लेकिन एक सवाल पूछने योग्य है, और वह सब कुछ बदल देता है।

क्या अलगाव हमारी मूल प्रकृति के बारे में बुनियादी सत्य है? या यह वह तरीका है जिससे चीजें वहाँ से दिखती हैं जहाँ हम खड़े हैं?

यह पूछना इनकार नहीं करता कि आपके पास शरीर है और मेरे पास शरीर है। इनकार नहीं करता कि आपके विचार आपके हैं और मेरे मेरे। कुछ भी व्यावहारिक इनकार नहीं करता। आप अभी भी अपना हाथ मेज से अलग पहचान सकते हैं।

सवाल इससे गहरा है। यह पूछता है कि क्या अलगाव की भावना हमें बताती है कि हम वास्तव में क्या हैं — या यह एक ऐसा उपकरण है जो इतनी अच्छी तरह काम करता है कि हम भूल गए कि यह उपकरण है।

किसी और चीज के बारे में बात करने से पहले — ईश्वर के बारे में, अर्थ के बारे में, एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें के बारे में — हमें वहाँ से शुरू करना होगा जहाँ हर कोई पहले से खड़ा है: अलगाव की भावना से, और यह इतनी विश्वसनीय क्यों है।

शरीर एक रेखा खींचता है

हमारे अलगाव महसूस करने का सबसे सरल कारण शरीर है।

आपका तंत्रिका तंत्र जीवित रहने के लिए बना है। यह खतरों और अवसरों का नक्शा बनाता है। यह जानता है कि जीव का क्या है और क्या नहीं।

भूख यहाँ महसूस होती है, इस पेट में। दर्द यहाँ महसूस होता है, इस शरीर में। स्पर्श, संतुलन, तापमान – हर संकेत एक ही बात कहता है: इस शरीर की रक्षा करो।

जीवित रहने के दृष्टिकोण से, दुनिया को 'मैं' और 'मैं नहीं' में बाँटना पूरी तरह समझदारी है। एक जानवर जो खुद को अपने वातावरण से अलग नहीं पहचान सकता, ज्यादा देर नहीं टिकेगा।

अलगाव गलती नहीं है। यह जीवित रहने की रणनीति है।

लेकिन रणनीति सत्य जैसी चीज नहीं है।

नक्शा उपयोगी है, लेकिन नक्शा भूभाग नहीं है। कोई चीज शानदार ढंग से काम कर सकती है बिना अस्तित्व के बारे में अंतिम शब्द हुए।

मन एक कहानी जोड़ता है

शरीर द्वारा खींची गई रेखा के ऊपर, मन एक कथावाचक जोड़ता है।

मनुष्य एक उल्लेखनीय काम करते हैं: हम अपने आप को एक कहानी सुनाते हैं कि हम कौन हैं।

हम संवेदनाएँ, यादें, भय, आशाएँ, आदतें लेते हैं और उन्हें एक पात्र में बुनते हैं। 'यह मैं हूँ। यह मेरा जीवन है। मुझे यह महत्वपूर्ण लगता है। मुझे इससे डर लगता है।'

यह कहानी उपयोगी है। यह निरंतरता बनाती है। यह सीखने, योजना बनाने, जिम्मेदारी लेने, अर्थ खोजने में सक्षम बनाती है।

लेकिन यह इस भावना को भी मजबूत करती है कि आत्मा एक चीज है – एक ठोस वस्तु जो अन्य ठोस वस्तुओं की दुनिया में चलती है, बाकी सबसे अलग।

जब लोग 'मैं' कहते हैं, तो अधिकांश को यकीन नहीं होता कि उनका मतलब क्या है।

शरीर? व्यक्तित्व? मन? मन के पीछे कुछ?

उन्हें यकीन नहीं क्योंकि 'मैं' की भावना पहले से तैयार आती है। यह खुद को स्पष्ट के रूप में प्रस्तुत करती है। किसी ने नहीं पूछा कि यह सटीक है या नहीं।

एक बार वह केंद्र मान लिया जाए, बाकी सब 'दूसरा' बन जाता है।

भाषा इसे स्थायी बना देती है

अगर शरीर एक रेखा खींचता है और मन उसे मजबूत करता है, तो भाषा उसे स्थायी महसूस कराती है।

भाषा चीजों को नामित टुकड़ों में बाँटकर काम करती है। पेड़। आसमान। व्यक्ति। अजनबी। मेरा। तुम्हारा। ये विभाजन उपयोगी हैं। इनके बिना आप संवाद, सहयोग, या स्पष्ट सोच नहीं कर सकते।

लेकिन उपयोगिता चुपचाप भ्रम बन सकती है।

क्योंकि भाषा बाँटती है, यह विभाजन को वास्तविकता की मूल प्रकृति जैसा दिखा सकती है। हम नामित चीजों को ऐसे मानने लगते हैं जैसे वे वास्तव में अलग-अलग इकाइयाँ हों, न कि एक ही प्रक्रिया के भीतर के प्रतिमान।

'समुद्र' शब्द पर विचार करें।

यह किसी ऐसी चीज को नाम देता है जो एक वस्तु जैसी लगती है। लेकिन समुद्र पत्थर जैसी एक वस्तु नहीं है। यह धाराएँ, तापमान, दबाव, ज्वार-भाटा हैं, सब एक साथ चल रहे हैं। शब्द इसे ठोस बनाता है। यह नहीं है।

शब्द जरूरी हैं।

लेकिन वे जहाँ केवल जुड़ाव है, वहाँ अलगाव का सुझाव दे सकते हैं।

समूह इसे बड़ा करता है

अलगाव व्यक्तिगत नहीं रहता। यह सामाजिक हो जाता है।

हम समूह बनाते हैं। पहचान विरासत में लेते हैं। 'हम' और 'वे' के बीच रेखाएँ खींचते हैं।

यह प्राचीन है, और हमेशा हानिकारक नहीं। समुदाय पोषक हो सकता है। साझी संस्कृति अपनापन बनाती है।

समस्या तब शुरू होती है जब अंतर दूरी बन जाता है — जब 'मेरे जैसा नहीं' बदलकर 'मुझसे कम' या 'मुझसे कोई लेना-देना नहीं' हो जाता है।

उस बिंदु पर, सहानुभूति वैकल्पिक हो जाती है।

दूसरे व्यक्ति का आंतरिक जीवन – उनका डर, उनकी आशा, उनकी थकान – दृष्टि से ओझल हो जाता है। इसलिए नहीं कि इसे नकारा गया। बल्कि इसलिए कि यह अब महसूस नहीं होता।

यह आमतौर पर क्रूरता के रूप में अपना परिचय नहीं देता। यह तर्कसंगतता के रूप में अपना परिचय देता है।

'वे हमसे अलग हैं।'

'वे हमारे मूल्य साझा नहीं करते।'

'उन्होंने यह चुना।'

ये वाक्य शांति से कहे जाते हैं। ठीक यही उन्हें ताकत देता है।

वह छलांग जो कोई नहीं देखता

शरीर, कहानी, भाषा और समूह के नीचे, एक ऐसी चाल है जिसे लगभग कोई अपने आप को करते हुए नहीं पकड़ता।

हम 'मैं अपने आप को अलग अनुभव करता हूँ' से 'मैं बुनियादी स्तर पर अलग हूँ' पर चले जाते हैं।

यह कदम स्वाभाविक लगता है। लेकिन यह गारंटीशुदा नहीं है।

अनुभव दृष्टिकोण से आकार लेता है। दृष्टिकोण डिज़ाइन से सीमित है। और सीमितता का मतलब अलगाव नहीं है।

जब आप सूर्योदय देखते हैं, तो वह बाहर लगता है। लेकिन प्रकाश आपकी आँखों में प्रवेश करता है, विद्युत संकेत बनता है, अनुभव बनता है। उस क्षण 'अंदर' और 'बाहर' की सीमा ठीक कहाँ है?

जब आप साँस लेते हैं, दुनिया कहाँ खत्म होती है और आप कहाँ शुरू होते हैं?

सामान्य जीवन में, हम लगातार एक-दूसरे को आकार देते हैं। भाषा, विश्वास, पहचान – ये चुने जाने से पहले विरासत में मिलते हैं। कोई अकेले वह नहीं बनता जो वह है।

पूर्णतः स्वतंत्र आत्मा को खोजना कठिन है।

तो पहला कदम बस बौद्धिक ईमानदारी है: अलगाव एक अनुभव है। यह इस बारे में अंतिम शब्द नहीं हो सकता कि हम क्या हैं।

उपयोगी सीमाएँ, अंतिम नहीं

सीमाएँ मौजूद हैं। शरीर में त्वचा है। अवधारणाओं की परिभाषाएँ हैं। ये सीमाएँ उद्देश्यों की सेवा करती हैं — जीवित रहना, समन्वय, संवाद।

लेकिन उपयोगी सीमाओं को आसानी से अंतिम मान लिया जाता है।

कोशिका में झिल्ली है, फिर भी वह केवल अपने परिवेश के साथ आदान-प्रदान के माध्यम से अस्तित्व में है। व्यक्ति में शरीर है, फिर भी वह केवल संबंध के माध्यम से अस्तित्व में है — जैविक, सामाजिक, पारिस्थितिक।

सीमाएँ जो मौजूद है उसे व्यवस्थित करती हैं। वे इसे अलग-अलग प्रकार के अस्तित्व में नहीं बाँटतीं।

इसे अमूर्त के बजाय सहज बनाने के लिए एक सरल छवि मदद करती है। आप रेत पर एक रेखा खींच सकते हैं और रेत दो अलग-अलग पदार्थ नहीं बन जाती।

रेखा वास्तविक है। रेत एक है।

अगर यह सत्य है — अगर वास्तविकता एक चीज है जो अनेक के रूप में प्रकट होती है, न कि अनेक चीजें जो एक होने का दिखावा करती हैं — तो जो इसके बाद आता है वह एक सुधार है। उस सुधार का नाम एकता है। समानता नहीं। भिन्नता का विलोपन नहीं। बस यह पहचान कि भेद के लिए वियोग की जरूरत नहीं।

एक बार यह दिख जाए, हम दुनिया के बारे में क्या मानते हैं और एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इनके बीच का संबंध अपरिहार्य हो जाता है।

आप यह पहले से जानते थे।

इस किताब को खोलने से पहले जानते थे। जब आप छोटे थे तब जानते थे, परतों के जुड़ने से पहले — शरीर के रेखा खींचने से पहले, मन के कहानी बनाने से पहले, भाषा के इसे जमा देने से पहले, समूह के इसे बड़ा करने से पहले।

आप इसे सच्ची निकटता के हर क्षण में जानते थे। हर उस सच्ची दयालुता के कार्य में जिसे किसी कारण की जरूरत नहीं थी। पहचान की हर उस चमक में जब आपने किसी दूसरे व्यक्ति को देखा और सतह के पीछे कुछ ऐसा देखा जो दूसरा नहीं था।

आप जानते थे। बस शब्द नहीं थे।

अब हैं।

कमीने मत बनो। दयालु बनो।

यह कृति हमेशा के लिए मुफ्त प्रकाशित है।

the420code.org

यह कृति Copyleft है। आप इसे डाउनलोड, प्रिंट, साझा और वितरित करने के लिए स्वतंत्र हैं। आप मूल स्रोत को बदलने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं। संकेत को स्वच्छ रखें।